माध्यमिक स्तर के विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के स्व-विनियमित अधिगम पर गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

सूरज भान* गीता खंडूड़ी **

*शोधार्थी शिक्षा विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखंड, भारत

**शोध निर्देशिका शिक्षा विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखंड, भारत

Article History:

Received: 24-08-2025

Accepted: 13-09-2025

Published: 30-09-2025

Keywords:

माध्यमिक स्तर, स्व विनियमित अधिगम

गृह वातावरण

Page No.: 180-187

Article code: V2025020

Access online at: https://veethika.co.in

Source of support: Nil

Conflict of interest: None declared

Published By: Pt. R.S.T.M. Society, Lucknow, India

Corresponding Author:

सूरज भान,

शोधार्थी शिक्षा विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखंड, भारत

Email: surajbhan016@gmail.com

शोध-सार

स्व-विनियमित अधिगम एक ऐसी प्रकिया है, जिसमें बालक स्वयं से नई योजना बनाकर कुछ नया सीखता है और स्वयं मूल्यांकन करता है, जिसमें उसके अध्ययन की आदतों को बढ़ावा देने में गृह वातावरण का योगदान भी होता है। प्रस्तुत शोधकार्य के उदेद्श्य लैगिंक व विषय वर्ग के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के स्व-विनियमित अधिगम की अध्ययन करना। माध्यमिक स्तर के विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के स्व-विनियमित अधिगम और गृह वातावरण के मध्य सह-सम्बन्ध तथा उन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा वर्णात्मक (सर्वेक्षण विधि) का प्रयोग किया गया है, जिसमें न्यादर्श के रूप में उत्तराखण्ड़ राज्य के चमोली जिले में दशोली ब्लॉक के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययन करने वाले कक्षा 11वीं एवं 12वीं के 150 छात्रों का सरल यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया तथा आकडों के एकत्र करने के लिए मधु गुप्ता और डीम्पल मेथानी मैठानी द्वारा निर्मित स्व-विनियमित अधिगम स्केल और हरपित भाटिया और एन0 के0 चड्डा द्वारा निर्मित फैमली एनवायरमेंट स्केल का प्रयोग किया गया। आंकड़ों की विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन, टी-टेस्ट, सह-सम्बन्ध और प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों प्रयोग के बाद निष्कर्ष में पाया गया कि स्व-विनियमित अधिगम में लैंगिक आधार पर अन्तर है, जबकि विषय वर्ग के आधार कोई अन्तर नहीं है। स्व-विनियमित अधिगम गृह और वातावरण के मध्य एक सकारात्मक सम्बन्ध और विशलेषण रूप से महत्वपूर्ण व प्रभाव देखने को मिलता है।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्व-विनियमित अधिगम को महत्वपूर्ण भूमिका दी गई है। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को स्वतंत्र, जिम्मेदार और स्व-विनियमित सीखने वाला बनाना है। इसके लिए नीति में निम्न पहलुओं पर जोर दिया गया स्व-विनियमन उच्च शिक्षा संस्थानों को अधिक स्व-विनियमन प्रदान करना, ताकि वे अपने शैक्षिक मामलों पर स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सकें। स्व-प्रेरित सीखना, छात्रों को स्वप्रेरित और स्व-विनियमित सीखने के लिए प्रोत्साहित करना, ताकि वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें, रणनीतियों का विकास कर सकें और अपनी प्रगति का मूल्यांकन कर सकें। शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षकों को छात्रों के स्व-विनियमित अधिगम को बढ़ावा देने के तरीकों पर प्रशिक्षित करना। स्व-विनियम अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति स्वयं अपने सीखने की प्रक्रिया को नियंत्रित और संचालित करता है। यह प्रक्रिया तीन मुख्य चरणों पर आधारित है- योजना निर्माण, कार्यान्वयन और स्वमूल्यांकन। स्व-मूल्यांकन चरण में व्यक्ति अपने प्रदर्शन का विश्लेषण करता है और आवश्यक संशोधन करता है। स्व-विनियम अधिगम में व्यक्ति की स्व-मोटिवेशन, स्व-नियंत्रण और स्व-मूल्यांकन क्षमताएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह प्रक्रिया सीखने की गुणवत्ता को बढ़ाती है और व्यक्ति को स्वतंत्र और जिम्मेदार सीखने वाला बनाती है।

गृह वातावरण एक ऐसा स्थान है जहाँ व्यक्ति अपने सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षिक विकास का अनुभव करता है। यह वातावरण व्यक्ति के व्यवहार, मूल्यों और व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। गृह वातावरण व्यक्ति के लिए सीखने के लिए उपयुक्त संसाधनों और अवसरों को प्रदान करता है, जो उसके शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाता है। अनुसंधान से पता चलता है कि गृह वातावरण और स्वविनियम अधिगम के बीच घनिष्ठ संबंध है। इससे बच्चों में आत्मविश्वास और स्वाधीनता की कमी आ सकती है, जो उनके सीखने पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। गृह वातावरण और स्वविनियम अधिगम के बीच एक मजबूत सकारात्मक संबंध है।

बर्टन (2013), वैज्ञानिक सोच विकसित करने की एक विधि के रूप में स्व-विनियमित अधिगम कौशल का विकास और वैज्ञानिक सोच के पीछे तर्क विज्ञान शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य रहा है अनुसंधान ने विज्ञान की प्रकृति को स्पष्ट और चिंतनशील ढंग से सिखाने में योग्यता दिखाई है इस अध्याय में लेखक चर्चा करता है कि कैसे स्व-विनियमित अधिगम सिद्धांतों में अनुसंधान ने इस खोज को आगे बढ़ाया है स्व-विनियमित अधिगम छात्रों की सीखने को तीन चरणों के माध्यम से व्याख्या करता है, प्रथम चरण- पूर्व विचार (संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं जो शिक्षार्थी को लक्ष्य विद्यालय जैसे सीखने के लिए तैयार करती है), द्वितीय चरण- प्रदर्शन (रणनीतियों का रोजगार और प्रगति के लिए आत्म निगरानी), तृतीय चरण- आत्म-प्रतिबिम्ब (लक्ष्य के साथ प्रदर्शन का मूल्यांकन)। **कामिनी (2023),** का शोधकार्य स्कूल जाने वाले किशोरावस्था के गृह वातावरण का अध्ययन। इस शोधकार्य में एस.बी.एस. जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय मे अध्ययनरत् 16-19 वर्ष की आयु वर्ग के 500 किशोरावस्था के छात्रों का गृह वातावरण के अध्ययन के अनुभवों से मिश्रा के गृह वातावरण मापनी द्वारा परिणामों से पता चला कि गृह वातावरण के संबंध में कोई बड़ा अंतर नहीं है। **वर्मा और सेकिया. (2023),** के शोध कार्य उद्देश्य स्व-विनियमित अधिगम के स्तर, शैक्षणिक शिथिलता के स्तर और छात्रों की शैक्षणिक शिथिलता पर स्व-विनियमित शिक्षा के प्रभाव का पता लगाना है। शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण का प्रयोग कर गौहाटी विश्वविद्यालय से संबद्ध असम के कामरूप (एम) कॉलेजों के 142 छात्रों पर किया गया। स्व-विनियमित अधिगम मापनी मधु गुप्ता और डिम्पल मैठनी (2017) व शैक्षणिक शिथिलता मापनी के लिए सविता गुप्ता और एल0 बसीर के प्रयोग द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण से परिणाम इंगित करते है कि कॉलेज के छात्रों का स्व-विनियमित अत्यंत उच्च स्तर से लेकर स्व-विनियमित शिक्षा के औसत स्तर के अंतर्गत आते है। **महमूत, मुहम्मद, जिया और फजिल. (2023),** के शोध कार्य तुर्की में कोविड-19 महामारी के दौरान गृह शिक्षा का गुणात्मक अध्ययनः गृह वातावरण पर ध्यान केंद्रित करना। शोधकार्य का उद्देश्य तुर्की में कोविड-19 महामारी दौरान स्कूल बंद होने के बाद घर पर सीखने व नये ज्ञान को अनुभवों के रूप में खोज करना था। जिसमें शोध की न्यादर्श 6-13 वर्ष के प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों और उनके माता-

पिता व कक्षा शिक्षक शामिल थे। निष्कर्षों के रूप में ज्ञात हुआ है कि शैक्षिक असमानताओं और पारिवारिक सामाजिक आर्थिक विशेषताओं, समर्थन और रुचि ने घर सीखने के अनुभवों और सीखने के वातावरण में घरों के परिवर्तन को प्रभावित किया। **लता और कुमार (2022),** का उद्देश्य उच्च प्राथमिक छात्रों के गृह वातावरण की जांच करना था। यह अध्ययन कन्याकुमारी जिले के विभिन्न स्कूलों में कक्षा 8 में पढ़ने वाले 400 उच्च प्राथमिक छात्रों का चयन कर सर्वेक्षण पद्धति द्वारा अख्तर और सक्सेना (2013) द्वारा विकसित होम एनवायरनमेंट स्केल का उपयोग कर विश्लेषण करने के लिए 'Vh' परीक्षण का उपयोग किया गया था, परिणाम से पता चला कि, उच्च प्राथमिक छात्रों के पास मध्यम स्तर का गृह वातावरण है। इसके अलावा लिंग और निवास स्थान के संबंध में उनके घर के वातावरण में काफी अंतर होता है।

शोध उद्देश्य

1. लैगिंक व विषय वर्ग के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के स्व-विनियमित अधिगम की अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के स्व-विनियमित अधिगम और गृह वातावरण के मध्य सह-सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के गृह वातावरण का स्व-विनियमित अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनायें

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में शोध उद्देश्यों के आधार पर शोध परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है-

परिकल्पना-1.1. लैगिंक आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का उनके स्व-विनियमित अधिगम में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना-1.2. विषय वर्ग के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का उनके स्व-विनियमित अधिगम में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना-02. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के स्व-विनियमित अधिगम और गृह वातावरण के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं है।

परिकल्पना-03. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के गृह वातावरण का उनके स्व-विनियमित अधिगम पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

शोध विधि- प्रस्तूत शोध कार्य में शोधकार्य द्वारा वर्णात्मक (सर्वेक्षण) विधि) का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या- प्रस्तुत शोध कार्य उत्तराखण्ड़ राज्य के चमोली जिले में दशोली ब्लॉक के माध्यमिक स्तर विद्यालयों में अध्ययन करने वाले कक्षा 11 वीं एवं 12 वीं के विद्यार्थियों को लिया गया है।

प्रतिदर्श- प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा प्रतिदर्श के चयन के लिए सरल यादृच्छिक विधि का प्रयोग कर माध्यमिक स्तर विद्यालयों में अध्ययनरत् 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

उपकरण- प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा आकडों के एकत्र करने के लिए मधु गुप्ता और डीम्पल मेथानी मैठानी द्वारा निर्मित स्व-विनियमित अधिगम स्केल (एस0आर0एल0एस0-जी0एम0एम0डी0) और हरपित भाटिया और एन0 के0 चड्डा द्वारा निर्मित फैमली एनवायरमेंट स्केल (एफ0ई0एस0-बी0सी0) का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय विधियाँ- प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा अध्ययन की आवश्यकतानुसार उद्देश्य, परिकल्पनाओं एवं आकड़ों की प्रकृति के आधार पर माध्य, मानक विचलन, टी-टेस्ट, सह-सम्बन्ध और प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। जिसे शोध कर्ता द्वारा विश्लेषण के लिए SPSS और M. S. EXCEL का उपयोग किया गया।

आकड़ों की व्याख्या

तालिका संख्या-1. लैंगिक व विषय वर्ग के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों का स्व-विनियमित अधिगम और गृह वातावरण का विवरण।

चरों	विद्यार्थियों का विवरण	विद्यार्थियों की संख्या	विद्यार्थियों की कुल संख्या	विद्यार्थियों का प्रतिशत	विद्यार्थियों का कुल प्रतिशत
स्व-विनियमित अधिगम और गृह वातावरण	छात्र	76	150	51 प्रतिशत	100 प्रतिशत
	छात्राऐं	74		49 प्रतिशत	
	कला वर्ग	75	150	50 प्रतिशत	100 प्रतिशत
	विज्ञान वर्ग	75		50 प्रतिशत	

तालिका संख्या-1. के अवलोकन से ज्ञात हुआ है। स्व-विनियमित अधिगम व गृह वातावरण में लैंगिक के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में छात्र 76 (51 प्रतिशत) व छात्राऐं 74 (49 प्रतिशत) तथा स्व-विनियमित अधिगम में विषय वर्ग के आधार पर कला वर्ग के 75 (50 प्रतिशत) व विज्ञान वर्ग के 75 (50 प्रतिशत) छात्र-छात्राऐं सम्मलित हुए है।

आरेख संख्या-1. लैंगिक व विषय वर्ग आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का प्रतिशत

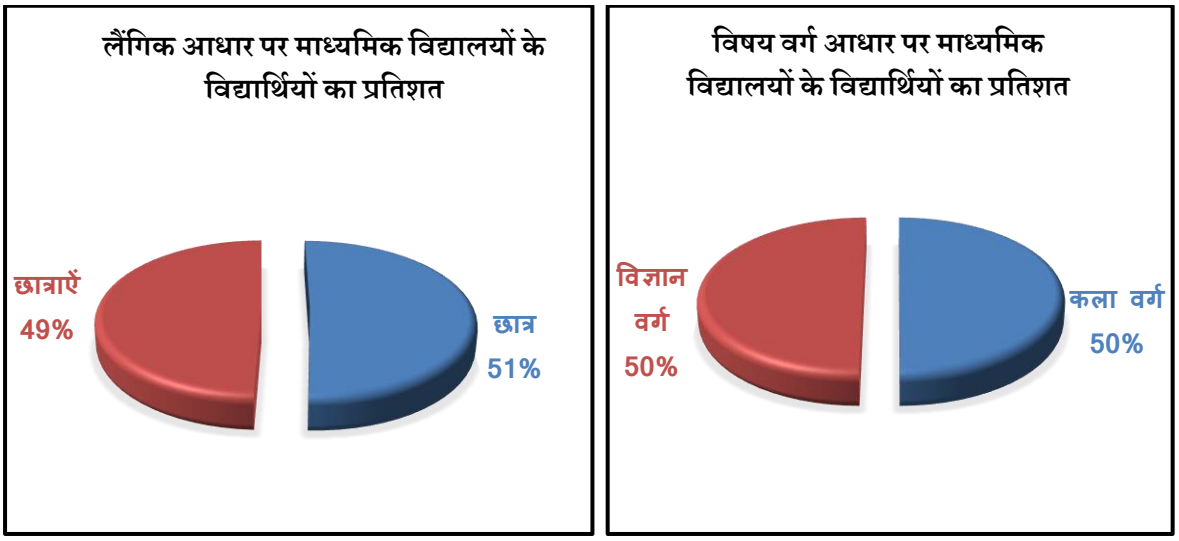

आरेख संख्या-1. के अवलोकन से ज्ञात होता है स्व-विनियमित अधिगम और गृह वातावरण में लैंगिक आधार पर छात्राओं की अपेक्षा छात्र अधिक सम्मलित हुए है, तथा विषय वर्ग के आधार पर कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र-छात्राऐं समान रूप से सम्मलित हुए है।

तालिका संख्या 2. लैंगिक व विषय वर्ग के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों का स्व-विनियमित अधिगम विवरण।

चर	लैंगिक/ विषय वर्ग के आधार पर	माध्य	मानक विचलन	स्वंतत्रता कोटि	टी-मान	सार्थकता स्तर
स्व-विनियमित अधिगम	छात्र	172.06	17.25	148	3.39	अस्वीकृत
	छात्राऐं	181.20	15.64			
	कला वर्ग	174.54	14.56	148	1.46	स्वीकृत
	विज्ञान वर्ग	178.60	19.10			

तालिका संख्या-2. में लैंगिक व विषय वर्ग के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों का स्व-विनियमित अधिगम के आंकडो को प्रस्तुत किया है, जिसमें माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों का लैंगिक आधार पर छात्रों का मध्यमान एवं मानक विचलन कमश 172.06, 17.25 तथा छात्राओं का 181.20, 15.64 के अनुसार टी का मान 3.39 (स्वतन्त्रता कोटि स्तर-148) जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक पाया गया। और विषय वर्ग के आधार पर कला वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान एवं मानक विचलन कमश 174.54, 14.56 तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का 178.60, 19.10 के अनुसार टी का मान 1.46 (स्वतन्त्रता कोटि स्तर-148) जो सार्थकता स्तर 0.05 पर असार्थक पाया गया।

आरेख संख्या-2. लैंगिक व विषय वर्ग के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों का स्व-विनियमित अधिगम विवरण।

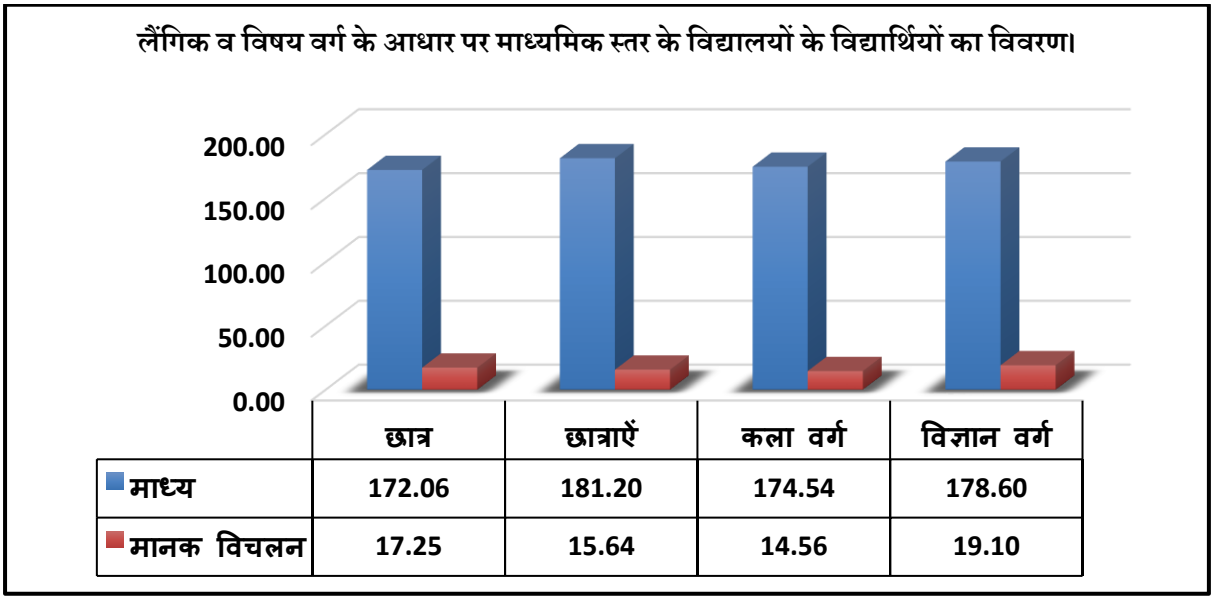

आरेख संख्या-2. के अवलोकन से ज्ञात होता है कि लैंगिक आधार पर छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में स्व-विनियमित अधिगम अधिक पाया गया और विषय वर्ग के आधार पर कला वर्ग की अपेक्षा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में स्व-विनियमित अधिगम अधिक पाया गया।

पूर्व में निर्धारित लैंगिक आधार पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत नहीं होती है। परिणाम के रूप में कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में स्व-विनियमित अधिगम प्रति अन्तर है। परन्तु विषय वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं होती है। परिणाम के रूप में छात्र एवं छात्राओं के स्व-विनियमित अधिगम प्रति अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या-3. स्व-विनियमित अधिगम और गृह वातावरण के मध्य सह-सम्बन्ध का विवरण।

चर	सह-सम्बन्ध	गृह वातावरण	स्व-विनियमित अधिगम
स्व-विनियमित अधिगम	पीर्यसन सह-सम्बन्ध (r)	.438	1.000
	सार्थकता-p (2-छोरीय)	0.000	0.000
	छात्रों की संख्या	150	150

तालिका संख्या-3. में चरों के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का स्व-विनियमित अधिगम और गृह वातावरण के आंकडों के मध्य पीर्यसन सह-सम्बन्ध विधि द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया जिसके परिणामों के अनुसार स्व-विनियमित व स्व-विनियमित के मध्य सह-सम्बन्ध "1" पाया गया है, क्योंकि समान चरों के मध्य सह-सम्बन्ध सदैव "1" होता है तथा गृह वातावरण और स्व-विनियमित अधिगम के मध्य सह-सम्बन्ध 0.438 है, जो (2-छोरीय- 0.000) सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक पाया गया।

पूर्व में निर्धारित गृह वातावरण और स्व-विनियमित अधिगम में सह-सम्बन्ध पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। परिणाम के रूप में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का स्व-विनियमित अधिगम और गृह वातावरण के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध है।

तालिका संख्या-4. स्व-विनियमित अधिगम और गृह वातावरण के मध्य प्रतिगमन विश्लेषण का विवरण।

क्रम0 संख्या	चर (गृह वातावरण)	आर	आर 2	प्रतिशत की भिन्नता	अनोवा	अनोवा सार्थता	नियतांक	बीटा	मनकीकरण-बीटा	टी-मान	सार्थकता स्तर
1.	स्व-विनियमित अधिगम	.438	.192	19.20	35.136	.000इ	89.890	.352	.438	5.928	.000

तालिका संख्या-4. स्पष्ट रूप से इंगित करती है कि पहले बहु प्रतिगमन विश्लेषण में दर्ज किया गया पहला स्वतंत्र चर गृह वातावरण था क्योंकि इसका स्व-विनियमित अधिगम के साथ उच्चतम सहसंबंध (0.438) था। हालाँकि, सकारात्मक संकेत चर गृह वातावरण का आकलन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरण के स्कोरिंग पैटर्न के कारण है,।

R^2 एक माप है जो दर्शाता है कि परिणाम चर में भविष्यवक्ता चर द्वारा कितनी परिवर्तनशीलता का हिसाब लगाया जाता है। जैसा कि तालिका-4 में दिखाया गया है, R^2 का मूल्य 0.192 पाया गया, जिसका अर्थ है कि स्व-विनियमित अधिगम के प्रसरण द्वारा ग्ह वातावरण में 19.20 प्रतिशत का प्रसरण पाया गया। शेष 80.80 प्रसरण प्रतिशत अन्य सम्बधित चरों के कारणों से भी हो सकता है, जिसको इस प्रतिगमन समीकरण में नहीं मापा गया है। गृह वातावरण, स्व-विनियमित अधिगम से सकारात्मक रूप से सम्बधित है।

F (अनोवा) का मान 35.136 पाया गया है जो इसकी P-मूल्य (F Sig) 0.000 है जो सार्थक स्तर 0.01 से कम पाया गया है। इस बात का सूचक है कि गृह वातावरण व स्व-विनियमित अधिगम के मध्य सार्थक प्रभाव पाया गया है। यह प्रतिमान माडॅल की सार्थकता को दर्शाता है, साथ ही यह प्रतिमान माडॅल सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मानकीकृत गुणांक (β) इस बात का माप है कि प्रत्येक भविष्यवक्ता चर परिणाम या मानदंड चर में कितनी दृढ़ता से योगदान देता है। मानकीकृत बीटा का मान 0.438 पाया गया (घनात्मक चिह्न गृह वातावरण के स्कोरिंग पैटर्न के कारण है)। β के लिए संबद्ध 't' मान 5.928 पाया गया जो P पर महत्वपूर्ण था।

स्थिरांक का मान 89.890 था। प्रतिगमन समीकरण स्थिरांक में B मान जोड़कर लिखा जाता है।

इसलिए, पहले चरण के अंत में प्रतिगमन समीकरण है:

$Y_1=A+b_1X_1$

$Y_1=89.890+(0.352)$

परिणाम

1. परिकल्पना-01.1. लैंगिक आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। परिणाम के रूप में छात्र एवं छात्राओं के स्व-विनियमित अधिगम प्रति सार्थक अन्तर है।
2. परिकल्पना-01.2. विषय वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं होती है। परिणाम के रूप में छात्र एवं छात्राओं के स्व-विनियमित अधिगम प्रति सार्थक अन्तर नहीं है।
3. परिकल्पना-02. चरों के आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। परिणाम के रूप माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का स्व-विनियमित अधिगम और गृह वातावरण के मध्य सार्थक धनात्मक सह-सम्बन्ध है।
4. परिकल्पना-03.चरों के आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। परिणाम के रूप माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का गृह वातावरण और स्व-विनियमित अधिगम के मध्य एक सकारात्मक और महत्वपूर्ण पूर्वानुमानकर्ता है, जो सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव देखने को मिलता है।

निष्कर्ष- गृह वातावरण एक ऐसा स्थान जिसमें विद्यार्थियों को कार्य को करने की स्वत्रंता होती है। जिससे वह अपने विचारों के माध्यम से स्व-विनियमित अधिगम और सीखने में भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण तथा क्षमताऐं प्रदर्शित कर लक्ष्य प्राप्त करता है। स्व-विनियमित अधिगम में लैंगिक आधार पर अन्तर है, जबकि विषय वर्ग के आधार कोई अन्तर नहीं है। गृह वातावरण और स्व-विनियमित अधिगम के मध्य एक सकारात्मक सम्बन्ध और विशलेषण रूप से महत्वपूर्ण व प्रभावी देखने को मिलता है। विद्यार्थियों को प्रेरणादायक, सहयोगी, शैक्षिक तथा तकनीकी संसाधनों से युक्त वातावरण प्रदान किया जाए तो उनके सीखने की क्षमता में सार्थक वृद्धि होती है। जो विद्यार्थियों की उपलब्धि और व्यक्तिगत विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

भावी शोध के लिये सुझाव

1. गृह वातावरण का स्व-विनियमित अधिगम के प्रति प्रभाव का अध्ययन विभिन्न स्तर में (स्नातक और परास्नातक) का अध्ययन।
2. गृह वातावरण के प्रति दृष्टिकोण का लैगिंक, विषय, क्षेत्र, जिले के आधार पर अध्ययन।
3. गृह वातावरण का स्व-विनियमित अधिगम के प्रति प्रभाव का अध्ययन सरकारी व गैरसरकारी विद्यालयों के योगदान के आधार पर अध्ययन।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क्रमास्र्की, बी., एवं मिखाल्स्की, टी. (2010). तकनीकी शैक्षणिक सामग्री ज्ञान के संदर्भ में स्व-विनियमित शिक्षण के लिए पूर्व-सेवा शिक्षकों को तैयार करना. *लर्निंग एंड इंस्ट्रक्शन,* 20(5), 434–447. https://doi.org/10.1016/j.learninstruc.2009.05.003

कामिनी. (2023). स्टडी ऑफ होम एनवायरनमेंट ऑफ स्कूल गोइंग एडोलसनस. *रिर्सच रिव्यु इन्टरनेशनल जर्नल आफॅ मल्टीडिश्पेनरी*, 8(3), 252-258.https://doi.org/10.31305/rrijm.2023.v08.n03.031

कालमन, एम. (2023). ए क्वालिटेटिव स्टडी ऑफ होम लर्निंग डूरिंग डुरिंग दा कोविड-19 पेन्डेमिक इन तुकीः ए फोकस ऑन होम एनवायरनमेंट. *एजुकेशनल रिर्सच*, (33)2, 631-48. https://www.researchgate.net/publication/371834908

डिका, एस., एवं सिंह, के. (2021). शिक्षा में सामाजिक पूँजी: साहित्य को संश्लेषित करने का एक प्रयास. *कोजेंट एजुकेशन,* 8(1), 1–15.https://doi.org/10.1080/2331186X.2021.1907956

पनेडेरो, ई. (2017). स्व-विनियमित शिक्षण की समीक्षा: अनुसंधान के लिए छह मॉडल और चार दिशाएँ. *फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी*, 8,422. https://doi.org/10.3389/fpsyg.2017.00422

फैन, एक्स. और चेन, एम. (2001). माता-पिता की भागीदारी और छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि: एक मेटा-विश्लेषण. *शैक्षिक मनोविज्ञान समीक्षा,* 13(1), 1-22. https://doi.org/10.1023/A:1009048817385

बर्टन, ई. ई. पी. (2013). वैज्ञानिक सोच विकसित करने की एक विधि के रूप में स्व-विनियमित शिक्षा. इन *अप्रोचेज़ एंड स्ट्रेटेजीज़ इन नेक्स्ट जेनरेशन साइंस लर्निंग*, *आईजीआई ग्लोबल पब्लिकेशन*, 1–26. https://doi.org/10.4018/978-1-4666-2809-0.ch001

ब्रह्मा, बी., एवं सैकिया, पी. (2023). कॉलेज के छात्रों की शैक्षणिक शिथिलता पर स्व-विनियमित शिक्षा का प्रभाव. *जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड हेल्थ प्रमोशन,* 12(1), 182. https://doi.org/10.4103/jehp.jehp_1106_22

लता, बी. पी., एंड कुमार, एस. पी. (2022). होम एनवायरनमेंट ऑफ उपर प्राइमरी स्टूडेंट्स. *इन्टरनेशनल जर्नल आफॅ हेल्थ साइंस*, 6(9), 3463-3466. https://doi.org/10.53730/ijhs.v6ns9.13348

सिंह. ए. के. (2015). मनोविज्ञान, समाजशात्र तथा शिक्षा में शोध विधियां. मोतीलाल बनारसीदास बंगलो रोड़ नई दिल्ली, 78-83

Website Link

https://www.blackplool.gov.uk/residents/education-and-schools/information-for-parents-and-carers/educational-diversity.aspx

https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

https://www.linkedin.com/pulse/home-environment-its-effect-childs-growth-development-s-desai

https://www.oxfordlearnersdictionaries.com/